IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लघु उद्यम के अन्तर्गत कागज आधारित उत्पाद का अध्ययन

(जिला राजनांदगाँव के संदर्भ में)

शोधार्थी–नीलू गुप्ता (अर्थशास्त्र), शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़

शोध निर्देशक–डॉ चन्द्रिका नाथवानी, सेवा निवृत्त विभागाध्यक्ष (अर्थशास्त्र),
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़

सारांश

कागज आधारित उत्पाद आज हमारे दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों का एक अभिन्न अंग बन चुका है आज कागज के बिना हम अपने वर्तमान और भविष्य की कल्पना भी नही कर सकते। इसका प्रयोग हम शिक्षा, विज्ञापन, सरकारी, व्यापारी तथा औद्योगिक लेखा–जोखा का ब्योरा रखनें में, चिकित्सकी संस्थानों में प्रयोग किया जाता हैं। दैनिक जीवन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी इनकी उत्पादन इकाईयों की संख्या तथा उत्पादन मात्रा में बहुत अधिक कमी देखी गयी है। इस शोध पत्र में कागज आधारित उत्पाद की उद्यम इकाईयों का अध्ययन राजनांदगाँव जिले के संदर्भ में किया गया है जिसमें लघु उद्यमों की स्थिति, उत्पादन क्षमता तथा इनसे सृजित रोजगार का अध्ययन किया गया है जिससे राजनांदगाँव जिला जो कृषि प्रधान क्षेत्र है में कागज आधारित उत्पाद इकाईयों की स्थापना एवं विकास की स्थितियों एवं सम्भावनाओं का अध्ययन करते हुए इन इकाईयों की समस्याओं का समाधान हेतु उपाय सुझाएँ गये है।

शब्दकुंजी–पुनर्नवीनीकृत, शैशवावस्था, लघु उद्यम, पारिस्थितिक तंत्र, खोई,।

प्रस्तावना

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व कागज उत्पाद का किसी न किसी रूप में प्रयोग कर रहा है क्योंकि इसका संरक्षण, संग्रहण तथा परिवहन बहुत ही सरलता से किया जा सकता है इसका प्रयोगन केवल शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी संस्थाएँ या व्यक्ति ही करते बल्कि प्रशासनिक, व्यवसायिक तथा व्यापारीक क्रियाकलाप में बहुत अधिक प्रयोग किया जा रहा है।[1] सर्वप्रथम कागज का उत्पादन चीन में किया गया था जिसके पश्चात अरब देश से होते हुए इसका प्रसार मध्य एशिया से अन्य क्षेत्रों में होने लगा। कागज उत्पादन हमारी दिन प्रतिदिन की क्रियाओं में रमा–बसा है इसका प्रयोग

1 Chaturvedi Gitanjali, Jain R.K.,Singh K. and Kulkarni Research paper "Indian Paper Industry – Growth and prospects", 2006,IPPTA J.Vol.18, No.2, Apr-Jun, page no.73-76.

हम किसी न किसी रूप में करते आ रहे हैं। लेकिन प्राचीन भारत के लोग कागज से अनभिज्ञ थे इसके स्थान पर ताड़ के पत्ते तथा छाल का प्रयोग करते थे जिसे ताड़ पत्र कहा जाता था। इसी प्रकार ताम्रपत्र, भोजपत्र, धातु पत्र तथा पत्थरों का प्रयोग जानकारी लिखने एवं संग्रहित करने में करते थे। धीरे–धीरे सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ सभ्यता का विकास हुआ और विदेशों के संपर्क में आने से नई उत्पाद एवं तकनीकों का प्रयोग होने लगा जिसमें से कागज एवं कागज उत्पादन तकनीक भी है। कागज उत्पादन करने वाले लघु उद्योगों का विकास एकाएक ना हो कर कई वर्षों के विकास का परिणाम है जिसके परिणामस्वरूप कागज वर्तमान में कोर उद्योगों में से एक महत्वपूर्ण उद्योग बन गया।[2][3]

छत्तीसगढ़ राज्य में कागज उद्यमों का विकास मुख्य रूप से बिलासपुर, रायपुर, चाँम्पा, रायगढ़ तथा राजनांदगाँव क्षेत्र में हुआ है इन क्षेत्रों में कई बड़ी कागज मिलें तथा कागज उत्पादन कम्पनियाँ स्थापित है।[4] जबकि राजनांदगाँव जिले में कागज उत्पाद आधारित लघु उद्यम अभी शैशवावस्था में है यहाँ कुछ गिने–चुने ही लघु उद्यम ही स्थापित हो पाये है। यद्यपि राजनांदगाँव जिला पर्यावरणीय संतुलन हेतु आवश्यक वन आच्छादित क्षेत्र के मापदण्ड 33 प्रतिशत से अधिक 36 प्रतिशत क्षेत्र में विस्तृत है लेकिन फिर भी कागज उत्पाद हेतु उद्यमों की संख्या में वृद्धि नहीं हो पा रही।[5] इनकी सहायता के लिए खादी एवं ग्रामोद्योग तथा जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र जैसी जिला स्तरीय संस्थाएँ कार्य कर रही हैं जिससे वन क्षेत्र का संतुलित विदोहन के साथ ही उन्नत तकनीक, मार्गदर्शन, उत्पादों में नवीनता, पुनर्चक्रीकरण, ऋण एवं प्रशिक्षण जैसे प्रोत्साहन कार्य किये जा रहे हैं जिससे परिणामस्वरूप कागज उत्पाद आधारित उद्यम विकास एवं विस्तार हेतु अग्रसर है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. कागज आधारित उत्पादन उद्यमों की स्थिति एवं सम्भावनाओं का अध्ययन करना।
2. कागज आधारित उद्यमों से सृजित रोजगार का अध्ययन करना।
3. जिले के लघु उद्यमों में कागज उत्पाद की उत्पादन क्षमता का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

भारत देश का छत्तीसगढ़ 2001 में अस्तित्व में आया जो एक कृषि प्रधान राज्य है जिसे धान का कटोरा कहाँ जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य की विशेषता रखने वाले राजनांदगाँव जिला इस शोध का अध्ययन क्षेत्र है यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि सम्बन्धित कार्यों में संलग्न है। राजनांदगाँव जिले के जलवायु कृषि के अनुकूल उष्णकटिबंध

2 Ambati Yellaswamy, Research Pepar “Paper Industry in India – An Analytical Study”, 7 july 2017, International Journal of Research in Managememt, Economics and Commerce,ISSN:2250-057X,Impact Factor:6.384, Volume 07, page no.13-17.

3 Latha A., Arivukarasi M.C., Keerthana C.M., Subashri R., Priya V.Vishnu, Research paper “Paper and Pulp Industry Manufacturing and Treatment Processes – A Review”, 2008, International Journal of Engineering Research&Technology (IJERT)ISSN:2278-0181,PECTEAM-2K18 Conference Proceedings Volume 6, Issue 02.

4 https://www-tofler-in.translate.goog/companylist/chhattisgarh/manufacturing-paper-product?_x_tr_sl.

5 Suraj M., Khan Akram, Research Paper”Environmental Impact of Parer Industry Review paper on part of Each Countryin this Impact” 2015, International Journal of Engineering Research&Technology (IJERT), ISSN: 2278-0181, volume 3, Issue 20, page no. 1-3.

है साथ ही यह वन संसाधन की दृष्टि से भी धनी है। यहाँ कृषि क्षेत्र के साथ–साथ औद्योगिक क्षेत्र का भी विकास हो रहा है जिनमें से एक कागज उत्पाद आधारित लघु उद्यम भी है जिसका अध्ययन शोध पत्र में किया गया है।[6]

शोध प्रविधि

यह शोध पत्र पूर्ण रूप से द्वितीयक समंक पर आधारित है जिसके लिए पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों तथा शोध पत्रों का अध्ययन किया गया है। शोध की अध्ययन अवधि पाँच वर्ष 2015–16 से 2019–2020 तक है। जिसमें कागज आधारित उत्पाद से सम्बन्धित लघु उद्यमों का अध्ययन किया गया है। इसमें प्रयुक्त होने वाले सांख्यिकी उपकरण प्रतिशत, दण्ड आलेख तथा सहसम्बन्ध गुणांक है जिसका प्रयोग उद्यमों की संख्या तथा रोजगार के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु किया गया है।

कागज उत्पाद

कागज उत्पादन की प्रक्रिया लम्बी होने के साथ–साथ जटिल भी है कागज उत्पादन हेतु कच्चे माल रसायन जल तथा उर्जा की आवश्यकता होती है कागज बनाने की प्रक्रिया यद्यपि लम्बी है लेकिन इसको दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है जिसमें प्रथम कार्य कच्चे माल/लकड़ी/बाँस से लुगदी बनाना इसके पश्चात द्वितीय कार्य लुगदी से पेपर बनाना है।[5][7] कागज उत्पादन हेतु कच्चे माल तीनस्रोतों से प्राप्त होती पहला वन क्षेत्र जिसमें लकड़ी तथा बाँस सम्मिलित है, दूसरा कृषि उत्पाद जिसमें धान की भूसी, गेहूँ की भूसी, गन्ने की खोई, फल एवं सब्जी के गुदे एवं छिलके को सम्मिलित किया जाता है जबकि तीसरा पुनर्नवीनीकृत उत्पाद जिसमें आरा मिल से प्राप्त उत्पाद, अन्य औद्योगिक अवशेष, समाचार पत्र तथा बेकार कागज को सम्मिलित किया गया है।[5]कागज उद्यमों को वन क्षेत्र से कच्चे माल सरकारी तथा स्थानीय लोगों की सहायता से प्राप्त होता है।[1] कागज उत्पादन में उपलब्ध कच्चे माल के रूप में लकड़ी और बाँस का प्रयोग 84 प्रतिशत होता है जबकि कृषि उत्पादों का प्रयोग 7 प्रतिशत तथा बेकार कागज/पुनर्नवीनीकृत उत्पाद का प्रयोग 9 प्रतिशत है। एक टन कागज उत्पादन के लिए 2.2 टन सूखी लकड़ी की आवश्यकता होती है, जबकि 2.5 टन खोई या 2.3 टन गेहूँ के भूसी से भी 1 टन कागज उत्पादित होता है इसी प्रकार 1.33 टन पुनर्नवीनीकृत या बेकार कागज से 1 टन कागज का उत्पादन किया जाता है।[2] कागज उत्पादन में बहुत अधिक जल, ऊर्जा एवं कुछ मात्रा में रसायन की आवश्यकता के साथ कच्चे माल के रूप में लकड़ी की भी बहुत अधिक आवश्यकता होती है जिससे यह उत्पादन प्रक्रिया थोड़ी महंगी तथा पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली भी होती है जिसके समाधान आगे वर्णित है।[3]

कागज उत्पाद आधारित लघु उद्यम

राजनांदगाँव जिले के लघु उद्यमों में कागज आधारित उत्पाद के अध्ययन हेतु जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र में अध्ययन अवधि वर्ष 2015–16 से 2019–2020 तक पंजीकृत लघु उघमों को सम्मिलित किया गया है जिनके द्वारा काजग आधारित उत्पाद विनिर्मित किये जा रहे है कागज उत्पाद में कागज, पेपर प्लेट, पेपर कप तथा कोरिगेटेड

6 जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2019–2020, जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़।

7 Fiqah A.N.,Sapuan S.M.,Ilyas R.A. Research Paper"Pulp and Paper Production:A Review",2021, Seminar on Advanced Bio- and Mineral based Natural Fiber Composites (SBMC2021), ISBN: 978-983-44426-9-9, page no. 10-13.

पेपर एवं बॉक्स को सम्मिलित किया गया है। राजनांदगाँव जिले में कागज आधारित उत्पादों के उत्पादन कार्य में संलग्न लघु उद्यमों का विवरण तालिका में वर्णित है–

तालिका क्रमाँक–1.1

राजनांदगाँव जिले में कागज उत्पाद आधारित लघु उद्यम

वर्ष 2015–16 से 2019–2020

क्रमांक	वर्ष	उद्यमों की संख्या	प्रतिशत में
1.	2015–16	3	43
2.	2016–17	NA	NA
3.	2017–18	1	14
4.	2018–19	2	29
5.	2019–2020	1	14
योग		7	100

स्रोत – जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, राजनांदगाँव(छ.ग.)

तालिका क्रमाँक–1.1 के अनुसार राजनांदगाँव जिले में अध्ययन वर्षों 2015–16 से 2019–2030 में कुल लघु उद्यमों की संख्या 7 रही जो बहुत ही कम है। जिसमें से वर्ष 2015–16 में ही 3 लघु उद्यम स्थापित हुएँ जबकि वर्ष 2016–17 में ये निरंक रहा जो निराशाजनक स्थिति को व्यक्त करती है। इसी प्रकार वर्ष 2017–18 में लघु उद्यमों की संख्या 1, 2018–19 में 2 तथा 2019–20 में भी एक रही। इससे स्पष्ट है कि अध्ययन वर्षों में वर्ष 2015–16 लघु उद्योगों की स्थापना अधिक हुई जो कुल उद्यमों का 43 प्रतिशत है। इसी प्रकार कुल स्थापित उद्यमों में वर्ष 2017–18 का योगदान 14 प्रतिशत, 2018–19 का 29 प्रतिशत तथा 2019–2020 का योगदान भी 14 प्रतिशत रहा जबकि वर्ष 2016–17 लघु उद्योगों के लिए सबसे खराब स्थिति में रही। जिसका कारण उद्यमियों में रूचि का अभाव, ऋण सम्बन्धि समस्या तथा उचित मार्गदर्शन का अभाव है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि राजनांदगाँव जिला वन सम्पदा से सम्पन्न होने के बाद भी कागज आधारित लघु उद्यमों की अल्पता जिले के औद्योगिक विकास पर प्रश्न चिन्ह अंकित कर रहा है जो एक विचारणीय विषय है।

लघु उद्यमों की उत्पादन क्षमता

किसी भी उत्पादन इकाई द्वारा उत्पादन में प्रयुक्त आगतों एवं क्रियाकलापों के परिणाम स्वरूप एक निश्चित समय में निश्चित मात्रा में निर्गत या उत्पादन का एक अनुमान लगाया जाता है जो किसी उद्यम के लाभ या हानि के निर्धारण में सहायक होता है उसे ही उत्पादन क्षमता कहाँ जाता है। इसी उत्पादन क्षमता के आधार पर एक निश्चित समय में उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले आगतों का अनुमान लगाया जाता है। इसकी गणना एक इकाई में एक निश्चित समयावधि के आधार पर की जाती है। इस शोध पत्र में उत्पादन क्षमता की गणना वार्षिक उत्पाद के आधार पर की गई है जिसकी मापदण्ड इकाई टन तथा संख्या है क्योंकि उत्पादित इकाई की मात्रा का मापदण्ड इकाई में भिन्नता को एक इकाई में व्यक्त करना सम्भव न हो सका।

अध्ययन वर्ष 2015–16 से 2019–2020 में यद्यपि स्थापित लघु उद्यमों की संख्या तो प्राप्त हुई लेकिन वार्षिक उत्पादन क्षमता मात्र वर्ष 2015–16 की ही उपलब्ध हुई जो 60 टन तथा 10 लाख संख्या में है। इसके बाद के वर्ष 2016–17, 2017–18,2018–19 तथा 2019–2020 की उत्पादन क्षमता निरंक रही। इसका कारण उद्यमों की स्थापना के पश्चात किन्ही कारणों से उनके द्वारा पंजीयन के समय जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र द्वारा उत्पादन प्रमाण पत्र प्राप्त न होने तथा उद्यमी द्वारा उत्पादन बन्द कर देना है। उद्यम बन्द करने का कारण अधिक उत्पादन लागत, कच्चे माल की कमी तथा उत्पादन तकनीक पूँजी आधारित होने से ऋण जैसी समस्याएँ है। इस प्रकार लघु उद्यमों की निम्न उत्पादन क्षमता औद्योगिक विकास की आशा को निराशा में परिवर्तित कर रहा है जो जिले के विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है।

लघु उद्यमों में रोजगार

राजनांदगाँव जिले की जनसंख्या सादा–जीनव उच्च विचार की भावना से ओतप्रोत है। यहाँ की जनसंख्या कृषि कार्य एवं कृषि से सम्बन्धित श्रम कार्य में संलग्न हैं लेकिन बढ़ती जनसंख्या और कृषि पर बढ़ते दबाव के कारण अपने परिवार के भरण–पाषण तथा आावश्यक मूलभूत सुविधाओं की प्राप्ति के उद्देश्य से अब लोग औद्योगिक संस्थानों एवं कारखानों की ओर रूख कर रोजगार प्राप्त कर रहे है। जहाँ कुछ लोग मजदूरी करते है तथा कुछ लोग स्वरोजगार होते है। राजनांदगाँव जिले में कागज उत्पादन में संलग्न लघु उद्यमों से सृजित रोजगार का अध्ययन किया गया जिसका विवरण तालिका में वर्णित है–

तालिका क्रमाँक–1.2

राजनांदगाँव जिले में कागज उत्पाद आधारित लघु उद्यमों में रोजगार

वर्ष 2015–16 से 2019–2020

क्रमांक	वर्ष	रोजगार	प्रतिशत में
1.	2015–16	33	59
2.	2016–17	NA	NA
3.	2017–18	9	16
4.	2018–19	6	11
5.	2019–2020	8	14
	योग	56	100

स्रोत – जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, राजनांदगाँव (छ.ग.)

तालिका क्रमांक–1.2 के अनुसार अध्ययन वर्ष 2015–16 से 2019–2020 तक जिले में कागज उत्पादन उद्यमों से सृजित कुल रोजगार की संख्या 56 है। जिसमें से वर्ष 2015–16 में सृजित रोजगार की संख्या 33 है जो कुल रोजगार का 59 प्रतिशत है। जबकि वर्ष 2016–17 में लघु उद्यमों की संख्या निरंक होने के कारण रोजगार भी निरंक है। वर्ष 2017–18 में सृजित रोजगार की संख्या 9 है जो कुल का 16 प्रतिशत है। वर्ष 2018–19 तथा2019–2020 में सृजित रोजगार की संख्या क्रमशः 6 तथा 8 है जो कुल रोजगार का क्रमशः 11 तथा 14 प्रतिशत है। इस प्रकार वर्ष 2015–16 की स्थिति रोजगार की दृष्टि से अन्य वर्षों की तुलना में बेहतर है।

राजनांदगाँव जिले में कागज उत्पाद आधारित लघु उद्यमों में रोजगार

वर्ष 2015–16 से 2019–2020

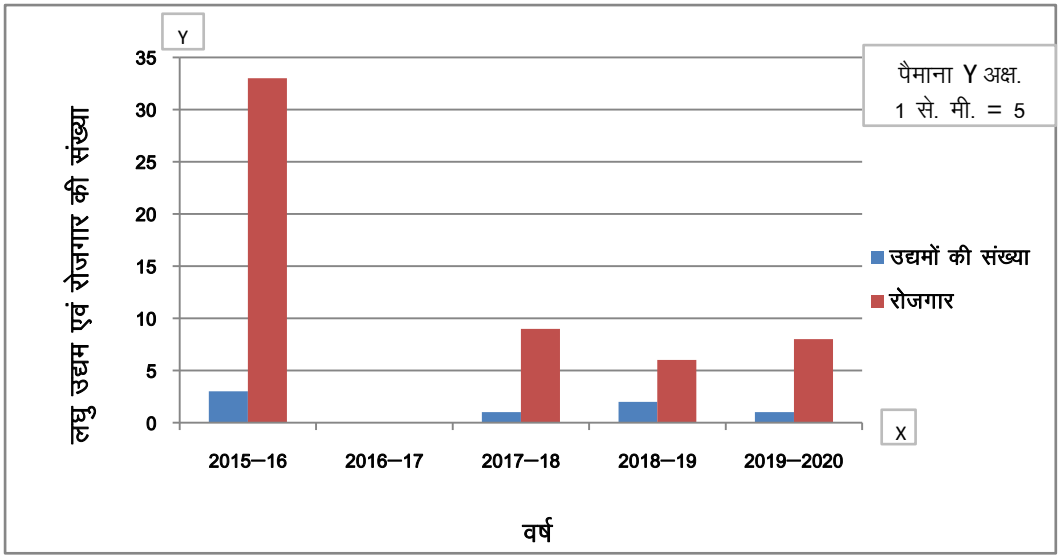

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि रोजगार सृजन में अध्ययन वर्षों की स्थिति समान नही रही प्रथम वर्ष में रोजगार सृजन अधिक हुआ लेकिन बाद के वर्षों में रोजगार में लगातार कमी दर्ज की गयी। जो मुख्य रूप से लघु उद्यमों की संख्या में लगातार होने वाली कमी के कारण है।

शोध अध्ययन में कागज उत्पाद आधारित उद्यमों की संख्या तथा रोजगार के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध गुणांक निकाला गया जिससे दोनों +85 की डीग्री में सहसम्बन्ध पाया गया अर्थात दोनों में उच्च धनात्मक सम्बन्ध है। जैसे–जैसे कागज आधारित उद्यमों की स्थापना एवं विकास होती जायेगी जिले की बेरोजगार जनसंख्या के लिए अधिकाधिक रोजगार का सृजन होगा। जो जिले निहित विकास की सम्भावनाओं को प्रदर्शित कर रहा है।

समस्याएँ

1. उत्पादन की परम्परागत तकनीकों के प्रयोग के कारण उद्यम कुल उत्पादन क्षमता से कम उत्पादन कर रहा है।
2. कागज उत्पादन प्रकिया में उत्पादन के प्रत्येक चरण जल की आवश्यकता होती है जिससे अधिक जल प्रयोग करने से जल की कमी एवं जल प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ने लगी है।
3. काजग उत्पादन हेतु कच्चा माल सर्वाधिक मात्रा में वन से ही प्राप्त किया जाता है जिससे वन विनाश, तापमान में वृद्धि, कच्चे माल की कमी तथा गैर–कानूनी गतिविधियों में वृद्धि हो रही है।
4. कागज उत्पादन में रसायनिक पदार्थों के प्रयोग एवं बिना उपचार अपशिष्टों को जल स्रोतों में छोड़ देने से जल, वायु तथा जलीय प्रदूषण होता है जिससे जल जीवन के साथ ही मानव जीवन पर भी खतरा बढ़ रहा है।
5. लकड़ीयों की अन्धाधुन्ध कटाई सेवन क्षेत्र का निम्नीकरण, परिस्थितकीय तंत्र में असंतुलन तथा पर्यावरण ह्रास की समस्या उत्पन्न हो रही है।

सुझाव

1. कागज उत्पादों की उत्पादन प्रकिया में नवीन तकनीका का समावेश करने की आवश्यकता है जिससे कुल उत्पादन क्षमता प्राप्त की जा सके।
2. जिन कच्चे माल से कागज बनाने में अधिक जल की आवश्यकता होती है उनके स्थान पर वैकल्पिक उत्पाद जैसे सहाबहार घास, केनाफ, फल एवं सब्जी के गुदे एवं छिलके का प्रयोग किया जाना चाहिए।
3. वन उत्पादों के प्रयोग के स्थान पर कृषि उत्पाद–खोई, गेहूँ एवं धान की भूसी, एवं पुनर्नवीनीकृत उत्पाद–औद्योगिक अवशेष, बेकार कागज के प्रयोग का बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
4. कागज उत्पादन में रसायन के प्रयोग को हतोत्साहित करते हुएँ स्वच्छ उत्पादन तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है साथ ही जल का पुनर्चक्रीकरण तथा जल उपचार की प्रकिया को अनिवार्य रूप से लागू करना की आवश्यकता है।
5. कागज उत्पादन की तकनीक का उन्नयन करते हुए स्वच्छ उत्पादन तकनीक तथा जल एवं वायु शोधन संयंत्रों की अनिवार्यता को सरकारी सहायता से दृढ़ता से लागू करना तथा हस्तनिर्मित कागज उत्पाद को बढ़ावा देना।
6. उद्यमियों को कागज उत्पादन हेतु प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम, समय पर उचित मार्गदर्शन, परामर्श एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि राजनांदगाँव जिले में कागज आधारित लघु उद्यमों की स्थिति गम्भीर है क्योंकि अध्ययन वर्षों में उद्योगों की स्थापना बहुत कम रही जिससे उत्पादन क्षमता और भी कम रही साथ ही रोजगार सृजन भी अंश मात्र रहा। जिले में लघु उद्यमों की सहायता से विकास करने सपना संकट में प्रतित हो रहा है। लेकिन अध्ययन में पाया गया कि लघु उद्यमों की संख्या एवं रोजगार सृजन के मध्य उच्च धनात्मक सम्बन्ध है। उद्यमों की संख्या में वृद्धि से बेरोजगारी जैसी जटील समस्या का समाधान स्थानीय क्षेत्र में ही सम्भव हो सकता है जिससे औद्योगिक एवं आर्थिक विकास के साथ–साथ जीवन स्तर में सुधार होगा परिणामस्वरूप सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास से संस्कारधानी का चहुमुखी विकास संभव होगा।

सम्भावनाएँ

सरकारी नीतियों एवं क्रियाकलापों के परिणाम स्वरूप कागज उत्पाद आधारित लघु उद्योगों की लाइसेन्सिग व्यवस्था में उदारता से उद्यमों को प्रोत्साहन मिला है तथा प्रतिस्पर्धा की क्षमता में वृद्धि हो रही है। सरकार द्वारा साक्षरता में वृद्धि हेतु स्कूली शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है जिसके लिए कॉपी–पुस्तक की माँग में वृद्धि से कागज की माँग भी बढ़ेगी जिससे उत्पादन, रोजगार तथा आय में वृद्धि होगी और जीवन स्तर ऊँचा होगा। जिसके प्रभाव से जिले के साथ–साथ राज्य तथा देश की अर्थव्यवस्था का विकास होगा और जीडीपी में वृद्धि होगी।

संदर्भ सूची

1. Chaturvedi Gitanjali, Jain R.K.,Singh K. and Kulkarni Research paper “Indian Paper Industry – Growth and prospects”, 2006,IPPTA J.Vol.18, No.2, Apr-Jun, page no.73-76.

2. Ambati Yellaswamy, Research Pepar "Paper Industry in India – An Analytical Study", 7 July 2017, InternationalJournal of Research in Managememt, Economics and Commerce,ISSN:2250-057X,Impact Factor: 6.384, Volume 07, page no.13-17.
3. Latha A., Arivukarasi M.C., Keerthana C.M., Subashri R., Priya V.Vishnu, Research paper "Paper and Pulp Industry Manufacturing and Treatment Processes – A Review", 2008, International Journal of Engineering Research&Technology (IJERT)ISSN:2278-0181,PECTEAM-2K18 Conference Proceedings Volume 6, Issue 02.
4. https://www-tofler-in.translate.goog/companylist/chhattisgarh/manufacturing-paper-product?_x_tr_sl
5. Suraj M., Khan Akram, Research Paper "Environmental Impact of Parer Industry Review paper on part of Each Countryin this Impact" 2015, International Journal of Engineering Research&Technology (IJERT), ISSN: 2278-0181, volume 3, Issue 20, page no. 1-3.
6. जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2019–2020, जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़।
7. Afiqah A.N.,Sapuan S.M.,Ilyas R.A. Research Paper "Pulp and Paper Production:A Review",2021, Seminar on Advanced Bio- and Mineral based Natural Fiber Composites (SBMC2021), ISBN: 978-983-44426-9-9, page no. 10-13.
8. जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़।
9. Alam Mahbub, Rikta Sharmin Yousuf, Bahauddin Khalid Md.,Hasnine Tanvir and Kamal Abdul Kadir Lbne, Research Paper "Production of Eco-Friendly Handmade Paper From Wastepaper and other local biomass material" july2018, Academia Journal of Environment Science 6[7]:147-155,DOI:10.15413/ajes.2018.0128, ISSN:ISSN 2315-778X.